17 दिसम्बर 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 18 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचमेरु नंदीश्वर विधान संपन्न

मंदसौर (राज.) : यहाँ कार्तिक माह की अष्टाह्निका में नरसिंहपुरा दि. जैन मंदिर में पंचमेरु नंदीश्वर विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. नरेन्द्रजी जैन जयपुर, पण्डित नेमीचंदजी ग्वालियर एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम का आयोजन श्री महेन्द्रजी जैन परिवार मऊखेड़ी द्वारा किया गया, जिसमें लगभग 300-400 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में समकित बांझल, नवीन जैन, अंकित लूणदा व संदीप शहपुरा के सहयोग से संपन्न हुये।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का समय परिवर्तित

अब डॉक्टर भारिल्ल अधिकांश जयपुर में ही रह रहे हैं। उनके प्रवचन प्रतिदिन शाम को श्री टोडरमल स्मारक भवन में अब 7.30 से 8.30 बजे तक होंगे; इनका लाइव प्रसारण www.ustream.tv/channel/ptst पर किया जा रहा है। आप सभी स्मारक भवन में पधारकर या घर बैठे इन्टरनेट पर अवश्य सुनें। प्रातःकाल : जी-जागरण चेनल पर 6.30 से 7.00 बजे तक भी उन्हें सुना जा सकता है।

- व्यवस्थापक : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री रत्नत्रय तीर्थ ध्रुवधाम में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की सातवीं वर्षगांठ के अवसर पर श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा दिनांक 4 से 8 दिसम्बर तक श्री पंचबालयति तीर्थंकर मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर के अलावा पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ध्रुवधाम इत्यादि अनेक विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिला। साथ ही जिनेन्द्र पूजन, भक्ति, रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया गया।

विशिष्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिदिन दोपहर में टोडरमल स्नातक विद्वत्परिषद के बांसवाड़ा जिले के विद्वानों द्वारा नयचक्र पर सार्थक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें पण्डित संजयजी शास्त्री परतापुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री देवड़िया अरथुना, पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित प्रीतमजी शास्त्री डडूका, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री जौलाना, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित नीतेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित आकाशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सतीशजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित धवलजी शास्त्री डडूका, पण्डित संजयजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम आदि विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का संयोजन एवं संचालन पण्डित रीतेशजी शास्त्री ने किया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित रमेशजी गायक इन्दौर एवं ध्रुवधाम के विद्यार्थियों द्वारा संपन्न कराये गये।

(आगामी कार्यक्रम...)

जयपुर पंचकल्याणक का द्वितीय वार्षिक महोत्सव

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुनः ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **द्वितीय वार्षिक महोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च 2014 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय –

वस्तु स्वातंत्र्य और अहिंसा

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

प्रतिदिन की भाँति आज भी माँ समता श्री का प्रवचन प्रातः ठीक ८.१५ पर प्रारंभ हुआ। विराग और चेतना को श्रोताओं की प्रथम पंक्ति में बैठे और प्रवचन की प्रतीक्षा करते देख माँ गौरवान्वित तो हुई ही, मन ही मन प्रसन्न भी हुई; क्योंकि प्रायः होता यह है कि दुनिया की दृष्टि में भगवान जैसा महत्व होने पर भी बेटा-बहू और घर-परिवार वालों को घर के विद्वान वक्ता की महिमा नहीं आती। यद्यपि इसमें मात्र परिवार वालों का ही दोष नहीं होता, किन्हीं-किन्हीं पारिवारिक धर्मप्रवक्ताओं का दुहरा व्यक्तित्व भी इसमें कारण होता है; वे घर-परिवार में कुछ और होते हैं और धर्मक्षेत्र में कुछ और। परन्तु समता श्री उन लोगों में नहीं है उनका हृदयपूर्ण पवित्र है, वे जो कुछ करती हैं, वह सब स्वान्त-सुखाय ही करतीं हैं तथा जो कुछ कहती हैं, वह सब पवित्र भावना से परहिताय ही कहती हैं, उसमें उनका किंचित भी निजी (व्यक्तिगत)कोई लौकिक स्वार्थ नहीं होता।

यों समताश्री अपने बेटे-बहू को भी, बेटे-बहू की दृष्टि से कम और आत्मार्थी के नजरिया से अधिक देखतीं हैं। अतः उनके लक्ष्य से प्रवचन करने पर भी अन्य सभी श्रोता हर्षित ही होते हैं। विराग की पैनी बुद्धि से उद्भूत शंकाओं के समाधानों से सभी लोग लाभान्वित भी बहुत होते हैं।

''वस्तु स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में अहिंसा की स्थिति कैसे संभव है ?'' इस प्रश्न के समाधान के लिए विराग और चेतना आतुर हैं। वे सही-सही समाधान पाने के प्रति पूर्ण आश्वस्त हैं। उन्हें विश्वास है कि आज उनकी बहुत दिनों से उलझी पहेली सुलझेगी, उन्हें उनकी शंकाओं का समाधान मिल ही जायेगा।

समता श्री ने प्रवचन प्रारंभ करते हुए कहा – ''आज 'अहिंसा परमोधर्मः' का नारा विश्व विख्यात है। भगवान महावीर के नाम से तो अहिंसा का नाम जुड़ा ही हुआ है, महात्मा गाँधी ने भी अहिंसा के नाम पर ही भारत को आजाद कराया है। इसकारण आज विश्व में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो अहिंसा शब्द से परिचित न हो।

वैसे भी हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह संग्रह को सारी दुनिया पाप मानती है और अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पुण्य व धर्म मानती है।

रामायण, महाभारत, गीता जैसे जगप्रसिद्ध ग्रन्थों में भी इन पुण्य-पाप रूप क्रियाओं का कथन होने से सारा जगत इनसे सामान्यतः सुपरिचित है।

हिंसा में प्रवृत्त मानव भी सिद्धान्त रूप से अहिंसा को ही अच्छा मानते हैं; यह उनके आत्म कल्याण के लिए शुभ लक्षण है। जिसे आज वे सिद्धान्त रूप से सही मानते हैं, उन्हें कभी जीवन में अपना भी सकते हैं। अतः हिंसा-अहिंसा के स्वरूप और इनके हेयोपादेयता को चर्चित रखना भी अति आवश्यक है।

कल विराग का प्रश्न था कि 'वस्तुस्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में अहिंसा का अस्तित्व कैसे संभव है? अतः आज इसी विषय पर विचार करेंगे।'

विराग की मूल समस्या यह है कि 'जब वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त के अनुसार विश्व के समस्त द्रव्य-गुण एवं उनमें प्रति समय परिणमित होने वाली पर्यायें पूर्ण स्वतंत्र हैं, कोई भी द्रव्य-गुण-पर्यायें, किसी अन्य द्रव्य-गुण-पर्यायों के कर्त्ता-धर्ता नहीं है और कोई भी द्रव्य, अन्य द्रव्य के परिणमन में किंचित् मात्र भी हस्तक्षेप नहीं करता।

सर्वज्ञता के आधार पर आगम भी इसी बात का समर्थन करता है कि –

'होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम?'[१]

यह आत्मगीत तो सम्पूर्ण जैन जगत में प्रचलित हैं।

उपर्युक्त वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त के अनुसार जब न केवल जन-जन की, न केवल जीव मात्र की; बल्कि पुद्गल के एक-एक परमाणु के परिणमन की स्वतंत्रता है तो ऐसी स्थिति में हिंसा/अहिंसा की स्थिति क्या बनेगी? क्या जीवों की रक्षा करने, दया करने और हिंसा, झूठ आदि पाप न करने का उपदेश व्यर्थ नहीं हो जायेगा ?''

समताश्री ने आगे कहा – ''विराग की सोच बहुत गजब की है, उसके तर्क सटीक हैं, युक्तियाँ प्रबल हैं। देखो! विराग ने आगम भी पढ़ लिया है। तभी तो वह आचार्यों के उदाहरण को प्रस्तुत करते हुए कहता है – 'यह वस्तु स्वातंत्र्य और हिंसा-अहिंसा की बात किसी व्यक्ति विशेष की मान्य या किसी दर्शन विशेष में उल्लिखित अवधारणा मात्र नहीं है, मनमानी सोच नहीं है; अपितु यह सत्य तथ्य हैं, सम्पूर्ण विश्वस्तरीय जैन-जैनेतर आगम (शास्त्र-पुराण) इसके लिए समर्पित है। जो खोजेगा वह वस्तु स्थिति की तह तक कभी न कभी तो पहुँच ही जायेगा।

सामान्यतः सभी धर्मों में और आम आदमियों के सोच के

१. क्षु. मनोहरलालजी वर्णी

अनुसार प्रायः अहिंसा-हिंसा की एक यही परिभाषा की जाती है कि 'जीवों को मारना, सताना या दुःख देना हिंसा है एवं प्राणियों का घात न होना या उनकी रक्षा करना अहिंसा है।'

किन्तु यह परिभाषा परिपूर्ण नहीं है। इसी लोक प्रचलित परिभाषा के कारण विराग के मन में ये प्रश्न खड़े हुए हैं। वस्तुतः हिंसा, अहिंसा का स्वरूप ही कुछ और है।

आचार्य कहते हैं आगम में लिखा है कि 'जीवघात होने पर भी यदि व्यक्ति का इरादा उसे घात करने का नहीं हो तो उसे हिंसक नहीं माना जाता। जीवघात तो अनेक कारणों से हो जाता; होता ही रहता है; जैसे – प्राकृतिक प्रलय, तूफान, बाढ़, महामारी, आगजनी, भूकम्प आदि अनेक ऐसी घटनायें होतीं ही रहती हैं; जिनमें असंख्य मानव पशु, पक्षी, कीड़े, मकोड़े और पेड़-पौधों तक का घात हो जाता है, फिर भी हिंसा का पाप किसी को नहीं लगता। उसे हिंसा कहते भी नहीं है।

इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति किसी के घात करने की सोचता भी है तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कोई ऐसी योजना बनाता है, जिसमें जीवों के मरने की संभावनायें होती हैं तो भले ही उसके सोच के अनुसार व्यक्ति का घात न हो और उसकी वह हिंसक योजना फेल हो जाने से एक जीव का घात न भी हो तो भी वह घात करने की सोचनेवाला और योजना बनानेवाला हिंसक है, अपराधी है; क्योंकि उसने सोचने एवं योजना बनाते समय जीवों के घात की परवाह नहीं की।

वस्तुतः हिंसा-अहिंसा का सम्बन्ध अन्य जीवों के मरने-न मरने से नहीं है, बल्कि स्वयं के अभिप्राय से है। यदि स्वयं का परिणाम क्रूर है और अभिप्राय जीवों के घात का है तो हम नियम से हिंसक हैं तथा अभिप्राय में क्रूरता और जीवघात की भावना नहीं है तो अन्य जीवों के मरने पर भी हम अहिंसक हैं जैसे कि ऑपरेशन थियेटर में ऑपरेशन करते-करते मरीज मर जाता है, किन्तु उस मौत के कारण डॉक्टर को हिंसक नहीं माना जाता। अतः जीव के मरने जीने से हिंसा-अहिंसा का सम्बन्ध नहीं है। हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है।

दो हजार वर्ष पूर्व लिखे आचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थ सूत्र में कहा है कि **'प्रमत्तयोगातप्राणव्ययरोपणं हिंसा'** अर्थात् प्रमाद के योग से हुआ जीवघात ही हिंसा है। वह प्रमाद १५ प्रकार का है – ४ कषायें, ४ विकथायें, ५ इन्द्रियों के विषय और निद्रा व प्रणय का आत्मा में होना भाव हिंसा एवं प्राणों का व्यपरोपण द्रव्य हिंसा है और इनका आत्मा में उत्पन्न न होना ही अहिंसा है। इस सूत्र में प्रमत्तयोग वाक्य का अर्थ भावहिंसा और 'प्राण व्यपरोपण' वाक्य का अर्थ द्रव्य-हिंसा है।

विराग बोला – ''वस्तु स्वातंत्र्य का अर्थ तो मैं समझ गया हूँ कि लोक में सभी द्रव्य अपने आप में परिपूर्ण, स्वाधीन, स्वावलम्बी और परनिरपेक्ष हैं। उनके अस्तित्व और परिणमन के लिए किसी अन्य द्रव्य की कतई आवश्यकता नहीं है। उनका अपना स्व-द्रव्य, स्व-क्षेत्र, स्व-काल एवं स्व-भावरूप स्व-चतुष्टय है। जिनके कारण उनका स्वतंत्र अस्तित्व है और उनके अपने स्वतंत्र पाँच समवाय हैं, पाँच कारण हैं; जिनसे उनका पर्यायरूप परिणमन होता है। इस संदर्भ में विचारणीय प्रश्न यह है कि द्रव्य/अहिंसा के साथ इस वस्तु स्वातंत्र्य का समायोजन कैसे हो यह स्पष्ट करें।''

इस प्रश्न के उत्तर में, समताश्री ने कहा – प्राणघातरूप द्रव्य हिंसा तो व्यवहार नय का कथन है, क्योंकि वह निमित्त सापेक्ष है। वास्तव में तो अन्य जीवों के जीवन, मरण, सुख-दुख से भी हिंसा-अहिंसा का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। उनके जीवन-मरण एवं सुख-दुःख में भी अंतरंग निमित्त कारण तो उनके ही आयुकर्म तथा साता-असाता वेदनीयकर्म हैं और उपादानकारण वे स्वयं हैं।

दो हजार वर्ष पूर्व आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्राकृत भाषा में लिखा हैं, जिसका हिन्दी पद्यानुवाद इस प्रकार है –

मैं मारता हूँ अन्य को या मुझे मारें अन्यजन।
यह मान्यता अज्ञान है जिनवर कहें हे भव्यजन!
निज आयु क्षय से मरण हो यह बात जिनवर ने कही।
तुम मार कैसे सकोगे जब आयु हर सकते नहीं ?
मैं हूँ बचाता अन्य को मुझको बचावे अन्यजन।
यह मान्यता अज्ञान है जिनवर कहें हे भव्यजन!।।
सब आयु से जीवित रहें – यह बात जिनवर ने कही।
जीवित रखोगे किसतरह जब आयु दे सकते नहीं?।।
मैं सुखी करता दुःखी करता हूँ जगत में अन्य को।
यह मान्यता अज्ञान है क्यों ज्ञानियों को मान्य हो?।।
हैं सुखी होते दुखी होते कर्म से सब जीव जब।
तू कर्म दे सकता न जब सुख-दुःख दे किस भाँति तब।।
जो मरे या जो दुःखी हों वे सब करम के उदय से।
'मैं दुःखी करता-मारता'– यह बात क्यों मिथ्या न हो? ।।
मैं सुखी करता दुःखी करता हूँ जगत में अन्य को।
यह मान्यता ही मूढ़मति शुभ-अशुभ का बंधन करे।।[१]

१. समयसार पद्यानुवाद : डॉ. भारिल्ल

(क्रमशः)

क्या टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय की कोई उपयोगिता नहीं ?

आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी की गहन प्रेरणा लौहपुरुष पण्डित बाबूभाई मेहता, काम के धुनी कर्मठ पण्डित नेमिचंदजी पाटनी की संकल्प शक्ति, श्रेष्ठी शिरोमणि पूरनचंदजी गोदीका का उदार सहयोग और इस सदी के जादुई आविष्कारक अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के नेतृत्व में आज से 36 वर्ष पूर्व 1977 में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की स्थापना जैनविद्या के क्षेत्र में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम था।

इस महाविद्यालय की स्थापना के पूर्व जैन विद्यालयों की जो दशा थी, वह किसी से छुपी नहीं है। विद्वानों को समाज में जो स्थान प्राप्त था; उसे बताने की भी आवश्यकता नहीं है। इसकारण प्राचीन जैन विद्यालयों से जो विद्वानों की परम्परा चलती थी; धीरे-धीरे वहाँ विद्यार्थियों का अकाल पड़ने लगा और या तो वे विद्यालय बंद हो गये या उनको अपनी धारा बदलनी पड़ी।

पूज्य गुरुदेवश्री का उदय इस क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव के लिए सदैव याद किया जावेगा। एक समय था जब समाज के श्रेष्ठीजन विद्वानों को क्रीतदास जैसे देखा करते थे। गुरुदेवश्री के उदय के बाद उनके मिशन में विद्वानों को सदैव उच्च स्थान प्राप्त हुआ; वे समाज/संस्थाओं में नेतृत्व करने लगे। इस सुखद बदलाव को न केवल सम्पूर्ण दि. जैन समाज; अपितु पूरी जैन समाज ने सराहा, स्वीकारा और उसका अनुकरण भी किया।

टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय की स्थापना ने जैन शिक्षा/विद्वत्परम्परा कायम रखने के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये।

पूज्य गुरुदेवश्री के पुण्य प्रभावना ध्वज को आगे बढाने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय से निकले हुए विद्वानों का है।

आज वे देश की अनेक राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर रहकर उनके सफल संचालन में अपना योगदान दे रहे हैं। साथ ही साथ अनेक गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं, जिसकी सूची बहुत लम्बी हो सकती है। उनमें से कुछ हैं - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, भारतवर्षीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति, तीर्थधाम मंगलायतन, ध्रुवधाम बांसवाड़ा, मुमुक्षु आश्रम कोटा, उदयपुर, अलवर, कुचामन, सोनगढ, चैतन्यधाम, राजकोट, अहमदाबाद, नागपुर, सोनागिर, द्रोणगिर, खनियांधाना, भोपाल, पौन्नूर के अलावा दक्षिण में एलोरा, कारंजा, बाहुबली, कचनेर, जैनबद्री, मूढबद्री के गुरुकुल, इन्दौर, मुम्बई, दिल्ली, चम्पापुर, कलकत्ता, चेन्नई, कोल्हापुर, सांगली जैसे प्रमुख शहरों में स्थापित हमारे प्रमुख केन्द्र.....।

इसके अलावा गांव-गांव में अनेक मुमुक्षु मण्डलों, युवा फैडरेशन की शाखाओं में तत्त्वप्रचार की जो विविध गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं, उनमें भी महाविद्यालय से निकले हुए स्नातकों का मुख्य योगदान है।

महाविद्यालय के स्नातक अपने-अपने स्थानों पर अपनी आजीविका के साथ-साथ समाज के बीच में सक्रिय रहकर प्रवचनों/कक्षाओं के माध्यम से निरंतर तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं और समाज की/मिशन की उन्नति में अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

अनेक विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों में जैनदर्शन, प्राकृत, संस्कृत-हिन्दी विभाग में महाविद्यालय के स्नातक उच्चपदों पर कार्यरत रहकर जैनदर्शन की महती सेवा कर रहे हैं।

यह भी इस विद्यालय के लिये गौरव की बात है कि इस महाविद्यालय से अभी तक लगभग 720 छात्र विद्वान बनकर निकल चुके हैं और उनमें 2-4 अपवाद छोड़ दें तो कोई भी छात्र बेरोजगार नहीं है।

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय से समाज इस रूप में तो लाभान्वित हो ही रहा है; परन्तु ये छात्र समाज के जिस तबके से आते हैं, उस तबके के विचार/जीवनयापन के स्तर में भी अभूतपूर्व बदलाव दिखाई देता है; सामाजिक स्तर पर हुए इस अभूतपूर्व/बदलाव में महाविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है।

साधु संतों और समाज के अन्य वर्गों में भी गुरुदेवश्री के इस मिशन के प्रति सोच में जो नरमाई, कोमलता और अनुकूलता आई है, उसमें भी इन सब बातों की निरंतरता का महत्वपूर्ण योगदान है।

दु:खद आश्चर्य की बात तो यह है कि इतने वर्षों से जब महाविद्यालय अपनी प्रतिष्ठा की पताका फहरा रहा है। उसकी प्रतिष्ठा/आवश्यकता/ उपयोगिता स्वयं सिद्ध है।

इतना सब प्रत्यक्ष स्पष्ट होने के बावजूद हमारी मुमुक्षु समाज के कुछ बुद्धिमान तथाकथित नीति-निर्धारक कर्णधारों को इस महाविद्यालय की कोई उपयोगिता दिखाई नहीं देती।

जब उनसे यह पूछा जाता है कि आपको इसकी उपयोगिता क्यों नहीं दिखाई देती तो वे जो कहते हैं, उसे लिखने में भी खेद होता है, वे कहते हैं कि महाविद्यालय से निकलकर स्नातक बी-एड. इत्यादि कर अपनी आजीविका की स्वाधीन व्यवस्था करना चाहता है। संस्थाओं में 5-10 हजार रुपये में काम करने हेतु स्नातक उपलब्ध नहीं होता। (आखिर इसमें बुरा क्या है क्योंकि वह श्रेष्ठीजनों का क्रीतदास नहीं बनना चाहता।) महाविद्यालय की सार्थकता का पैमाना यह होना चाहिये कि वहाँ से कितने और कैसे विद्वान तैयार हो रहे हैं, न कि संस्थाओं में कार्य करने वाले कितने कार्यकर्ता वहाँ से तैयार हो रहे हैं। इस महाविद्यालय की स्थापना का एकमात्र मूल उद्देश्य जैनदर्शन के ठोस विद्वान तैयार करना ही है, जिसमें यह महाविद्यालय पूरी तरह से सफल हुआ है, हो रहा है।

ये ही विद्वान तैयार होकर समाज में तत्वप्रचार की अलख जगाए हुए हैं, हमारे नीति-निर्धारकों को -

(1) दशलक्षण पर्व के अवसर पर देशभर में 550-600 स्थानों

(गाँव-गाँव) में अवकाश लेकर भी तत्त्वज्ञान की प्रभावना के कार्य में लगी 600-700 स्नातक विद्वानों की बड़ी भारी फौज क्यों नहीं दिखाई देती।

(2) प्रतिवर्ष अवकाशों के समय गाँव-गाँव में स्नातक विद्वानों के अथक परिश्रम से लगने वाले सैंकड़ों बालसंस्कार शिविर/ग्रुपशिविरों के द्वारा होने वाली एवं धीरे-धीरे स्थायी परिणाम देने वाली क्रान्ति क्यों नहीं दिखाई देती।

(3) स्थान-स्थान पर स्नातक विद्वानों द्वारा निरंतर चलाई जा रही स्वाध्याय सभायें, गोष्ठियाँ क्यों नहीं दिखाई देतीं ?

(4) अनेकों शैक्षिक संस्थानों में अपनी प्रतिभा और योग्यता का लोहा मनवा रहे सैंकड़ों स्नातक क्यों नहीं दिखाई देते ?

(5) टोडरमल महाविद्यालय के विद्वानों के सहयोग से प्रतिवर्ष होने वाले 2-5 पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, अनेक वेदी प्रतिष्ठा/विधानों/संगोष्ठी/सेमिनारों/शिविरों के आयोजन से समाज की जीवंतता और उससे धीरे-धीरे होने वाले दूरगामी परिवर्तन क्यों नहीं दिखाई देते ?

सभी नेतागणों को करोड़ों अरबों रुपयों के प्रोजेक्ट बनाकर सीमेन्ट कंकरीट के जंगल खड़े करने, धर्मशालायें बनाने आदि कार्यों की तो समाज के लिये उपयोगिता दिखाई देती है, उन्हें विद्वान भी इन विशाल भवनों की देखरेख के लिये चाहिये। उनमें तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की कोई स्थायी ठोस योजनाओं को बनाकर उनका संचालन करने के लिये नहीं। समाज भी इस काम के लिये लाखों रुपये लुटाने को तैयार रहती है; परन्तु उनमें जीवंतता लाने वाले ऐसे जीवंत स्मारक गढने जैसे श्रमसाध्य कामों में किसी को कोई रस नहीं है। जिन संस्थाओं में ऐसे कार्य हो रहे हैं, वहाँ उस काम को करने हेतु आवश्यकतानुसार सभी को विद्वान भी उपलब्ध हैं ही।

पुन: यह एक संक्रमण काल की दस्तक है जब इस विद्यालय को उसके पालनहारों से ही चुनौती मिल रही है और हम सब स्नातकों को समाज के प्रति अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिये चुनौती है। आओ हम सब इसके लिये संन्नद्ध हो जायें।

मैं इस आलेख के माध्यम से स्नातक परिषद् के सभी माननीय सदस्यों को आह्वान करना चाहता हूँ कि महाविद्यालय की सामाजिक आवश्यकता और उपयोगिता, महाविद्यालय की उनके स्वयं के जीवन में उपयोगिता, यदि महाविद्यालय न होता तो... इत्यादि विषयों पर अपने आलेख/विचार प्रेषित करें। चुनिन्दा विचार यथाअवसर यथास्थान प्रकाशित भी करेंगे।

आशा है हमारी समाज के कर्णधार गुरुदेवश्री की 125वीं जन्मजयन्ती वर्ष में उनके द्वारा रोपे गये एवं पण्डित बाबूभाई द्वारा सींचे गये इस पल्लवित पुष्पित वटवृक्ष की उपयोगिता समझकर उसे बढाने की ही सोचेंगे, घटाने की नहीं।

फूटी आँख विवेक की कहा करे जगदीश।
कंचनिया को तीन सौ मनीराम को तीस।।

पीयूष जैन शास्त्री
महामंत्री : पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद, जयपुर

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित –

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:काल –

5.15 से 6.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का प्रवचन
6.15 से 7.00	पाठ एवं जी-जागरण पर डॉ. भारिल्ल का प्रवचन
7.30 से 8.15	विभिन्न कक्षायें
	(1) सर्वार्थसिद्धि – डॉ.संजीवकुमारजी गोधा (शास्त्री प्रथम व तृतीय वर्ष)
	(2) परीक्षामुख – पण्डित पीयूषजी शास्त्री
8.15 से 9.00	प्रवचन : पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल – प्रवचनसार
9.00 से 9.45	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नमंच

सायंकाल –

6.00 से 6.45	गुणस्थान विवेचन – ब्र. यशपालजी जैन
7.00 से 7.30	जिनेन्द्र भक्ति
7.30 से 8.30	**डॉ. भारिल्ल का प्रवचन :** समयसार- सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर
8.30 से 9.15	विभिन्न कक्षायें

(1) आप्तपरीक्षा – पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष)
(2) प्रमेयरत्नमाला – पण्डित पीयूषजी शास्त्री (शास्त्री प्रथम वर्ष)

नोट – जो भी साधर्मी यहाँ रहकर इन कार्यक्रमों का लाभ लेना चाहते हैं, वे कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं। सभी साधर्मीजन प्रवचनहॉल में होने वाले कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण इंटरनेट के माध्यम से **www.ustream.tv/channel/ptst** पर देख सकते हैं।

शोक समाचार

(1) दिल्ली निवासी श्रीमती शांतिदेवी जैन का दिनांक 1 दिसम्बर को 91 वर्ष की आयु में देव-शास्त्र-गुरु के स्मरणपूर्वक शांत व समताभाव से देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप प्रसिद्ध समाजसेवी और आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली के अध्यक्ष श्री विमलकुमारजी जैन (नीरु केमिकल्स) की माताजी थीं। अपनी माताजी की प्रेरणा और संस्कारों के कारण श्री विमलकुमारजी जैन ने जबेरा (म.प्र.) में श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर का निर्माण कराया। इसके अतिरिक्त पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में आपका अपूर्व योगदान सदैव रहता है। आपकी स्मृति में संस्था को 31 हजार रुपये प्राप्त हुये।

(2) इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्री शान्तिलालजी जैन (बघेरवाल) चूनावाले का दिनांक 11 नवम्बर को 80 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक व णमोकार महामंत्र का स्मरण करते हुए देहावसान हो गया। आप सोनगढ में हुए मानस्तम्भ पंचकल्याणक के समय से ही गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के संपर्क में रहे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 201-201/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

सिद्धभक्ति

11 चतुर्थ पूजन

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

लोक में सूर्य और चन्द्रमा को महान माना जाता है। उनकी महिमा से यह सम्पूर्ण लोक भलीभाँति परिचित है। यहाँ सिद्ध भगवान को उन सूर्य और चन्द्रमा से भी महान बताया जा रहा है; क्योंकि सूर्य सूर्य है और चन्द्रमा चन्द्रमा। सूर्य चन्द्रमा नहीं और चन्द्रमा सूर्य नहीं।

हे सिद्ध भगवान आप सूर्य भी हो और चन्द्रमा भी।

हे सिद्ध भगवन् ! आप संसारताप को करनेवाले कारणों को हरणकरने के लिए शरणरूप **रस के कुंआ** हो और मान कषायादि के मदरूपी ज्वर की जलन के हरण के लिए आप घन अर्थात् **बादलों के रूप** में हो।

जल इस जगत में जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक वस्तु है। उसके बिना लोक में हाहाकार मच जाता है। इसलिए यह जगत जल की महिमा से भलीभाँति परिचित हैं। जल कुएं से मिलता है और बादल तो जल के मूल साधन हैं ही।

यहाँ मात्र जल की बात नहीं है, अपितु कुएँ के जल की बात है; क्योंकि कुएँ का जल हमारी आवश्यकतानुसार सर्दियों में गर्म और गर्मी में ठंडा रहता है।

यहाँ यह कहा गया है कि हे भगवन् ! आप कुआं भी हो और बादल भी; रस के कुआं हो और आनन्द वर्षा करने वाले बादल हो।

इसप्रकार सिद्ध भगवान सूर्य भी हैं और चाँद भी हैं, कुआं भी हैं और बादल भी हैं। तात्पर्य यह है कि इस जगत में लोगों द्वारा मान्य **जो-जो उपयोगी** और **महान वस्तुएँ हैं; वे सभी सिद्धों में समाहित हैं।**

तीसरे छन्द का पूर्वार्द्ध इसप्रकार है -

(चौपाई)

अकथित महिमा अमित अथाई, निर-उपमेय सरसता नाई।

हे सिद्ध भगवन् ! आपकी अपरिमित महिमा की न तो थाह पाईजा सकती है और न उसके बारे में कुछ कहा जा सकता है; क्योंकि वहवाणी से अकथित है एवं इतनी गहरी है, गंभीर है कि उसकी गहराई को नापा नहीं जा सकता है और उसकी सीमा भी अपरिमित सारे लोक मेंप्रसारित है। इसप्रकार हम कह सकते हैं कि आपकी महिमा अमित, अकथितहै और अथाह है। उसके समान कोई अन्य न होने से वह महिमा अनुपम है।

इसके बाद आगामी छन्द इसप्रकार हैं -

(चौपाई)

भावलिंग बिन कर्म खिपाई, द्रव्यलिंग बिन शिव पद पाई ।।३।।
नय विभाग बिन वस्तु प्रमाणा, दया भाव बिन निज कल्याणा।
पंगु सुमेरु चूलिका परसै, गुंग गान आरम्भे स्वर सै ।।४।।
यों अजोग कारज नहीं होई, तुम गुण कथन कठिन है सोई।

जिसप्रकार **भावलिंग** धारण किए बिना कर्मों का खपाना कठिन है, **द्रव्यलिंग** के बिना मोक्षपद प्राप्त करना कठिन है, **नयविभाग** को समझे बिना अथवा नयविभाग का प्रयोग किये बिना वस्तुस्वरूप प्रकाशित करना कठिन है, **दयाभाव** के बिना अपना आत्मकल्याण करना कठिन है; जिसप्रकार **लंगड़े व्यक्ति** द्वारा सुमेरु पर्वत की चूलिका का स्पर्श करना कठिन है, **गूंगे व्यक्ति** का मधुर स्वर से गाना कठिन है।

जिसप्रकार उक्त अयोग्य कार्यों का होना कठिन है; उसीप्रकार हे सिद्ध भगवन् ! आपका गुणानुवाद करना भी उतना ही कठिन है।

सिर्फ इतनी बात कहने के लिए कि आपका गुणानुवाद अत्यन्त कठिन है; कवि ने दृष्टान्तों की माला खड़ी कर दी।

यद्यपि उन्होंने कठिनता की बात की है; तथापि जो बातें कठिनता के संदर्भ में गिनाई हैं; वे कठिन नहीं, एक प्रकार से असंभव ही हैं।

न केवल वे बातें असंभव हैं, अपितु भगवान के गुणों का गान करना भी एकप्रकार से असंभव ही है।

सिद्ध भगवान की भक्ति अत्यन्त कठिन है; यह बात कहने के बहाने महाकवि ने यहाँ अनेक महत्त्वपूर्ण विषय प्रस्तुत कर दिये हैं।

छठवें-सातवें आदि गुणस्थानों के योग्य अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण एवं प्रत्याख्यानावरण कषाय के भूमिका के योग्य उपशम, क्षय, क्षयोपशम के अनुसार होनेवाली शुद्धपरिणति और प्रति अंतर्मुहूर्त में होनेवाले शुद्धोपयोगरूप भावलिंग के बिना कर्मों का खपाना कठिन नहीं, असंभव है।

इसीप्रकार नग्न दिगम्बर दशा और छठवें गुणस्थान के योग्य शुभभावरूप द्रव्यलिंग के बिना भी तो मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती। यह भी कठिन नहीं, असंभव है।

इसीप्रकार नयविभाग को समझे बिना वस्तुस्वरूप को समझ पाना कठिन नहीं, असंभव है।

दया दो प्रकार की होती है - १. स्वदया, २. परदया।

अनादिकाल से आजतक हमने अपने आत्मा की सुधि नहीं ली, वह नर्क-निगोद के दुख भोगता रहा, पर हमें उस पर रंचमात्र भी दया नहीं आई। जबकि हम चाहते तो अपने आत्मा की शुधि लेकर, उसे भलीभाँति जानकर, पहिचानकर, उसमें ही अपनापन स्थापित कर, उसका ही ध्यान धर, उसे संसार सागर से पार उतार सकते थे, उतार सकते हैं; यह पूर्णत: हमारे हाथ की बात है; क्योंकि आजतक जितने भी जीवों ने अपना कल्याण किया है, वह पूर्णत: स्वयं ही किया है।

अपने आत्मा को संसार सागर में न डूबने देना ही असली स्वदया है, जो हम कर सकते हैं और हमें हर कीमत पर करना भी चाहिए।

दूसरे परजीवों की दया की बात है, वह व्यवहार दया है। वह भी ज्ञानी धर्मात्माओं के जीवन में होती है और होनी भी चाहिए।

वस्तुत: बात यह है कि कोई किसी का भला-बुरा तो कर नहीं सकता; सब अपने भले-बुरे के कर्त्ता-धर्त्ता स्वयं ही हैं।

यदि हम पर के संदर्भ में कुछ कर सकते हैं तो मात्र इतना ही

कर सकते हैं, वह भी मात्र निमित्त के रूप में कि हम उसे सन्मार्ग दिखा सकते हैं, आत्मा का सही स्वरूप समझा सकते हैं।

केवली भगवान और गणधर देवादि भी इसीप्रकार का परोपकार करते हैं। अत: हमें इसप्रकार का कार्य अवश्य करना चाहिए।

यद्यपि असली परदया तो यही है; तथापि व्यवहार से हम जो भी सहयोग कर सकते हैं, वह हमें अवश्य ही करना चाहिए।

उक्त प्रतिपादन मुक्तिमार्ग में अत्यन्त आवश्यक है; जिसे आपने भगवान की भक्ति की महिमा दिखलाने के बहाने बड़ी ही सरलता से प्रस्तुत कर दिया है। आगामी पाँचवाँ आधा छन्द इसप्रकार है –

(चौपाई)

सर्व जैन-शासन जिनमाहीं, भाग अनन्त धरै तुम नाहीं ।।५।।

हे सिद्ध भगवन् ! सम्पूर्ण जैन शासन में तुम्हारें गुणों का अनन्तवाँ भाग भी नहीं आया है। तात्पर्य यह है कि यदि तुम्हारे गुणों का प्रतिपादन किया जाये तो सम्पूर्ण जैन शासन में तुम्हारें गुणों का अनन्तवाँ भाग भी नहीं आयेगा। तात्पर्य यह है कि तुम्हारे गुणों का गान करना तो एकदम असंभव काम है; जिसे करने की मैंने ठानी है।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि आप ऐसा क्यों करते हैं कि कभी एक लाइन, कभी दो लाइनें, कभी तीन लाइनें और कभी चार लाइनें एक साथ प्रस्तुत करते हो, छन्दों के अनुसार अर्थ क्यों नहीं समझाते?

अरे भाई ! बात यह है कि हम अर्थ के अनुसार लाइनों को रखते हैं। यदि तुम जरा सा प्रयास करो तो सबकुछ स्पष्ट हो जायेगा।

छठवाँ छन्द इसप्रकार है –

(चौपाई)

गोखुर में नहिं सिंधु समावे, वायस लोक अन्त नहीं पावै।
तातैं केवल भक्तिभाव तुम, पावन करो अपावन उर हम ।।६।।

चिकनी मिट्टीवाले प्रदेश में बरसात के दिनों में जब गाये चलती हैं तो उनके खुरों से गीली मिट्टी में जो गड्ढे पड़ जाते हैं; उन्हें **गोखुर** कहते हैं। **गोखुर माने गायों के खुरों से बने हुए छोटे-छोटे गड्ढे।**

उन गोखुरों के गड्ढों में जिसप्रकार समुद्र नहीं समा सकता और कौआ कितना ही उड़े, पर लोक के अन्त को प्राप्त नहीं कर सकता; उसीप्रकार मेरी तुच्छ बुद्धि में आपके गुण नहीं समा सकते, मेरी तोतली वाणी से आपके गुणों का गान नहीं हो सकता। इसलिए हे सिद्ध भगवन्! तेरे प्रति जो भक्तिभाव मेरे हृदय में है; उसी के बल पर मुझसे जो कुछ बन पड़ रहा है, कर रहा हूँ। हे भगवन् ! आप तो मेरे इस अपवित्र हृदय को पवित्र कर दो।

इस छन्द में कवि का सूक्ष्म निरीक्षण प्रतिबिंबित होता है। गाय के खुरों से बने गड्ढेरूप गोखुर में जिसप्रकार समुद्र का सम्पूर्ण पानी नहीं समा सकता, उसीप्रकार मेरी वाणी में तेरी भक्ति नहीं समा सकती है।

देखो, अपनी बात कहने के लिए कवि का ध्यान कहाँ गया। मैंने स्वयं देखा कि मालवा की चिकनी गीली मिट्टी में बरसात के दिनों में गड्ढे पड़ जाते हैं। वह जमीन जब सूख जाती है तो वे गड्ढे जैसे के तैसे बने रह जाते हैं। जब दुबारा बरसात होती है तो उनमें पानी भर जाता है। आप सोचिये जरा, उन गड्ढों में कितना पानी आता होगा। **क्या गोखुर के उस गड्ढे में समुद्र समा सकता है ?**

सातवाँ छन्द इसप्रकार है –

(चौपाई)

जे तुम यश निज मुख उच्चारैं, ते तिहुँ लोक सुजस विस्तारैं।
तुम गुणगान मात्र कर प्रानी, पावैं सुगुण महा सुखदानी ।।७।।

मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि जो व्यक्ति निज मुख से तुम्हारे यश का उच्चारण करता है; उसका सुयश तीन लोक में फैल जाता है। तुम्हारें मात्र गुणगान करने से जगत के प्राणी महा सुख देनेवाले सुगुणों को प्राप्त कर लेते हैं।

तात्पर्य यह है कि आप इतने महान हो कि जो व्यक्ति आपके नाम का उच्चारण करता है, आपकी महिमा के गीत गाता है; उससे आपका यश जगत में फैलता हो – ऐसी बात नहीं है; क्योंकि **आपका यश तो जगत में पहले से फैला हुआ है; बल्कि आपका यश गानेवाले का यश तीन लोकों में फैल जाता है।**

इसीप्रकार जो व्यक्ति आपका गुणगान करता है, उसे महासुख देने वाले गुणों की प्राप्ति हो जाती है।

इसप्रकार आपका गुणगान करनेवाले और यशगान करनेवालों को महासुख देनेवाले गुणों की प्राप्ति हो जाती है और उसका यश तीन लोक में फैल जाता है।

(क्रमश:)

समाज की समस्याओं पर संगोष्ठी

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के तत्त्वावधान में 11 एवं 12 जनवरी को पंचबालयति मंदिर इन्दौर में जैन समाज की ज्वलंत समस्याओं पर राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यशाला एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित है।

सभी सदस्य सादर आमंत्रित हैं। **– अखिल बंसल, महामंत्री**

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की **द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा दिसम्बर-2013 के अंतिम सप्ताह में आयोजित होने जा रही है।** संबंधित परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र सामग्री डाक से भेजी जा चुकी है। कदाचित 25 दिसम्बर 2013 तक भी प्रश्नपत्र नहीं पहुंचे तो फोन द्वारा सूचना भेजकर प्रश्नपत्र मंगा लेवें। **– प्रबंधक, ओ.पी.आचार्य**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

17 दिसम्बर 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

तत्त्वज्ञान की धारा में जुड़े दिगम्बर जैन समाज के विवाह सम्बन्धों हेतु

मुमुक्षु मंडप – 2014

अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2013

बन्धुवर,

मुमुक्षु समाज के विवाह सम्बन्ध तत्त्वज्ञान से संस्कारित परिवारों से हों – इस पवित्र भावना से मुमुक्षु मंडप–2014 का प्रकाशन किया जा रहा है। समाज के साधर्मियों से अनुरोध है आप अपने विवाह योग्य पुत्र–पुत्रियों के बायोडाटा भेजें। हम सभी प्रविष्टियों का संकलन पुस्तक के रूप में प्रकाशित करआपको एवं देश के सभी मुमुक्षु मंडलों में भेजेंगे। जिससे आपको योग्य सम्बन्ध मिल सके। हमारे प्रयास की सफलता आप पर निर्भर है।

विशेष – ❁ परिचय प्रकाशन नि:शुल्क ❁ घर बैठे योग्य सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त ❁ पुत्र–पुत्रियों का जीवन सुखमय ❁ फार्म ई–मेल से भी जमा करने की सुविधा ❁ सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज की एकमात्र विवाह पत्रिका

फार्म प्राप्त करने के लिये आप हमें E-mail या SMS करें अथवा डाक से प्राप्त करने के लिये अपना पूरा पता भेजें।

प्रकाशक पण्डित विराग शास्त्री, सर्वोदय ज्ञानपीठ, सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर–482002 (म.प्र.)
मो. 9300642434, 8989894932, E-mail : mumukshumandap@gmail.com

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

शीतकालीन परीक्षा 2014 का आयोजन दिनांक 26, 27, 28 जनवरी 2014 को होने जा रहा है। संबंधित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र प्रवेश फार्म भरकर जयपुर कार्यालय को भिजवा देवें।– **श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015 (राज.)**

धार्मिक व शैक्षणिक भ्रमण संपन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला हनुमानगंज का वार्षिक धार्मिक व शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम दिनांक 24 नवम्बर को रखा गया। इस अवसर पर पाठशाला के लगभग 62 छात्र–छात्राओं को श्री मरसलगंज (ऋषभनगर) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र ले जाया गया, जहाँ सामूहिक पूजा के उपरान्त विभिन्न धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

नि:शुल्क साहित्य प्राप्त करें

सभी त्यागी ब्रह्मचारी भाई–बहिनों को उनकी आवश्यकतानुसार टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं अन्य दि. जैन संस्थाओं से प्रकाशित मूल ग्रन्थ एक मुमुक्षुभाई की ओर से नि:शुल्क दिये जा रहे हैं, अत: आप जो भी ग्रन्थ प्राप्त करना चाहें, उसके लिये कृपया निम्न पते पर पोस्टकार्ड लिखें या मोबाइल पर **संपर्क करें** – डॉ. वैद्य दीपक जैन, सी–115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर–302015 मोबा. 09352990108

साप्ताहिक गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा होने वाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 1 दिसम्बर को **'सम्यग्ज्ञान : एक चिन्तन'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में वैभव जैन भिण्ड (शास्त्री प्रथम वर्ष), वीतराग वसवाडे (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं विनीत जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण निकुंज खड़ैरी एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के भूषण विटालकर व प्रतीक शाह मुम्बई ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने एवं ग्रन्थ भेंट गोम्मटेश चौगुले ने किया।

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह–सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127